

शिक्षण में सक्रिय अधिगम प्रविधि (एएलएम) का अध्ययन

समता वर्मा

डॉ. बी.आर. बरोदे

शोधार्थी

शोध निर्देशक

सार

प्रस्तुत शोध पत्र में कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में सक्रिय अधिगम विधि कि प्रभावशीलता पर शोध किया गया है। अध्यापन में पाया गया कि सक्रिय अधिगम प्रविधि एवं परंपरागत विधि की तुलना में अधिक प्रविधियों का प्रयोग किया गया तथा सक्रिय अधिगम विधि परंपरागत विधि कि तुलना में अधिक प्रभावी रही है। जब वे पाठ्यक्रम सामग्री के साथ जुड़ते हैं और सक्रिय रूप से अपने सीखने में भाग लेते हैं। फिर भी पारंपरिक शिक्षण मॉडल ने छात्रों को निष्क्रिय रिसेप्टर्स के रूप में स्थान दिया है जिसमें शिक्षक अवधारणाओं और सूचनाओं को जमा करते हैं। मॉडल ने पाठ्यक्रम सामग्री के वितरण पर जोर दिया है और मूल्यांकन में पाठ्यक्रम सामग्री को प्रतिबिंबित करने में निपुण छात्रों को पुरस्कृत किया है।

मुख्य शब्द: शिक्षण, शिक्षक, सक्रिय अधिगम प्रविधि.

परिचय

सक्रिय शिक्षण पद्धति भी गतिविधि आधारित शिक्षण का एक रूप है। यह सभी शिक्षार्थियों को सीखने में भाग लेने के लिए बनाता है। इस पद्धति में छात्र पढ़ने, लिखने, बोलने, चित्र बनाने, साझा करने, कौशल को व्यक्त करने और व्यक्तिगत रूप से और समूहों में प्रश्न करने में शामिल होते हैं। सक्रिय सीखने में छात्रों को चीजों को करने और वे जो कर रहे हैं उसके बारे में सोचने में शामिल होते हैं। बोनवेल और ईसन के अनुसार छात्रों को सिर्फ सुनने से ज्यादा कुछ करना चाहिए। उन्हें पढ़ना, लिखना, चर्चा करना और समस्याओं को हल करना चाहिए। उन्हें उच्च-क्रम के सोच कार्यों में संलग्न होना चाहिए। कार्य विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन हैं। छात्रों को पारंपरिक व्याख्यान पद्धति की तुलना में सक्रिय सीखने को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ पसंद हैं। सक्रिय सीखने में, छात्र कुछ ऐसा कर रहे हैं जिसमें जानकारी की खोज, प्रसंस्करण और आवेदन करना शामिल है। सीखने की प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए कई शिक्षण रणनीतियों को नियोजित किया जा सकता है। एएलएम में गतिविधियां महत्वपूर्ण सोच में कौशल में सुधार करती हैं, प्रेरणा और प्रतिधारण और पारस्परिक कौशल में वृद्धि करती हैं। सक्रिय शिक्षण में छात्र सीधे और सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। केवल मौखिक और दृश्य रूप से जानकारी प्राप्त करने के बजाय, छात्र प्राप्त कर रहे हैं और भाग ले रहे हैं और कर रहे हैं। सक्रिय सीखने के तरीकों की आवश्यकता है कि छात्र को सार्थक बात करने, सुनने, लिखने और पढ़ने के अवसर खोजने चाहिए।

सक्रिय अधिगम प्रविधि

सक्रिय अधिगम प्रविधि में विद्यार्थी सक्रिय सहभागिता करता है तथा विषयवस्तु अनुसार गतिविधि/प्रयोग आदि कार्य स्वयं करता है तथा शिक्षक सुविधादाता के रूप में होता है। सक्रिय भागीदारी के साथ सीखने की प्रविधि है इसमें सबसे अधिक महत्व इस बात को दिया जाता है कि विद्यार्थी किस तरह से अधिक से अधिक सीख सकता है। सक्रिय अधिगम का वातावरण ऐसा होता है जिसमें शिक्षार्थी सिर्फ शिक्षक के द्वारा

बताए गए ज्ञान को यथावत स्वीकार करने स्थान पर अपने ज्ञान की रचना स्वयं करने को अधिक महत्व दे सके। ऐसे में शिक्षार्थी ज्ञान का वाहक ही नहीं बल्कि निर्माता भी होता है।

● सक्रिय शिक्षण क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?

अनुसंधान और उपाख्यानात्मक साक्ष्य इस दावे का अत्यधिक समर्थन करते हैं कि छात्र सबसे अच्छा सीखते हैं जब वे पाठ्यक्रम सामग्री के साथ जुड़ते हैं और सक्रिय रूप से अपने सीखने में भाग लेते हैं। फिर भी पारंपरिक शिक्षण मॉडल ने छात्रों को निष्क्रिय रिसेप्टर्स के रूप में स्थान दिया है जिसमें शिक्षक अवधारणाओं और सूचनाओं को जमा करते हैं। मॉडल ने पाठ्यक्रम सामग्री के वितरण पर जोर दिया है और मूल्यांकन में पाठ्यक्रम सामग्री को प्रतिबिंबित करने में निपुण छात्रों को पुरस्कृत किया है। अच्छी अल्पकालिक यादों और पढ़ने के कौशल वाले छात्रों के पास लूट की प्रवृत्ति रही है। शब्द सक्रिय शिक्षा को आमतौर पर स्वीकृत शब्दों में परिभाषित की तुलना में सहज रूप से अधिक समझा गया है। नतीजतन, कई शिक्षक कहते हैं कि सभी सीखना सक्रिय है। क्या कक्षा में व्याख्यान या प्रस्तुतीकरण सुनते समय छात्र सक्रिय रूप से शामिल नहीं होते हैं? हालांकि शोध से पता चलता है कि छात्रों को केवल सुनने के अलावा और भी कुछ करना चाहिए उन्हें पढ़ना, लिखना, चर्चा करना या समस्याओं को हल करने में संलग्न होना चाहिए (चिकरिंग और गैमसन 2017)। इसके अलावा, छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसे उच्च-क्रम के सोच कार्यों में संलग्न होना चाहिए। इस प्रकार गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली रणनीतियाँ जिसमें छात्रों को चीजों को करने में शामिल किया जाता है और वे जो कर रहे हैं उसके बारे में सोचते हैं, उन्हें सक्रिय शिक्षण कहा जा सकता है

बॉनवेल और ईसन कहते हैं "...कि छात्रों को सिर्फ सुनने से ज्यादा करना चाहिए उन्हें पढ़ना, लिखना, चर्चा करना या समस्याओं को हल करने में संलग्न होना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण, सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए, छात्रों को ऐसे उच्च-क्रम के सोच कार्यों में संलग्न होना चाहिए। विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन के रूप में। इस संदर्भ में, यह प्रस्तावित है कि सक्रिय सीखने को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों को निर्देशात्मक गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए जिसमें छात्रों को चीजों को करने और वे क्या कर रहे हैं इसके बारे में सोच रहे हैं।" कक्षा में इन तकनीकों का उपयोग छात्रों के सीखने पर उनके शक्तिशाली प्रभाव के कारण महत्वपूर्ण है। अध्ययनों से पता चला है कि छात्र पारंपरिक व्याख्यानों के लिए सक्रिय शिक्षण को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों को प्राथमिकता देते हैं। छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने वाले अन्य शोध अध्ययनों ने प्रदर्शित किया है कि सक्रिय सीखने को बढ़ावा देने वाली कई रणनीतियाँ सामग्री की महारत को बढ़ावा देने के लिए व्याख्यान के लिए तुलनीय हैं, लेकिन छात्रों के सोचने और लिखने के कौशल के विकास को बढ़ावा देने में व्याख्यान से बेहतर हैं। कुछ संज्ञानात्मक शोधों से पता चला है कि बड़ी संख्या में व्यक्तियों की सीखने की शैली होती है जो व्याख्यान देने के अलावा अन्य शैक्षणिक तकनीकों का उपयोग करके सबसे अच्छी तरह से संपर्क किया जाता है। जबकि पिछले एक दशक में 'सक्रिय शिक्षण' और सहकारी शिक्षा में कॉलेज के संकाय के बीच रुचि का विस्फोट देखा गया है, कॉलेज के संकाय अभी भी पारंपरिक व्याख्यान मोड में अपनी कक्षाओं को पढ़ाते हैं।

सक्रिय शिक्षण पद्धति (एएलएम)

एक्टिव लर्निंग मेटडोलॉजी मानती है कि एक बच्चे का दिमाग चमत्कार कर सकता है। यह सुझाव देता है कि शिक्षार्थी को कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए और उसे निडर होकर व्यवहार करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। बच्चे के मस्तिष्क को बदलने के लिए शिक्षक द्वारा समान कक्षाओं और समान पाठ्यपुस्तकों का उपयोग किया जाता है। इंजीनियरिंग छात्रों की अंग्रेजी भाषा की कक्षा में, विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके एएलएम को अपनाया जा सकता है। उनमें से कुछ हैं:

1. छात्रों को शामिल करने के लिए समूह कार्य, जोड़ी कार्य और व्यक्तिगत कार्य को बढ़ावा देने के लिए कार्यों को इस तरह से डिज़ाइन किया जाना चाहिए।
2. छात्रों को एक दूसरे का साक्षात्कार करने और कक्षा में शिक्षक से बात करने की अनुमति दी जानी चाहिए
3. छात्रों को अपने स्वयं के कुछ विषयों को तैयार करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए।
4. विभिन्न कार्यों का उपयोग करके रचनात्मकता को बढ़ावा देना। कार्य की प्रासंगिकता उनके पास रखें।

उदाहरण के लिए – असाधारण भाषणों, समूह चर्चाओं, प्रस्तुतियों और नकली साक्षात्कारों की इंजीनियरिंग के छात्रों द्वारा सराहना की जाती है क्योंकि वे इन कार्यों को प्रासंगिक पाते हैं उनकी जरूरतें क्योंकि ये कार्य उन्हें भविष्य के लिए तैयार करते हैं मेयर (2004) का सुझाव है कि सीखने के लिए छात्रों को व्यावहारिक रूप से सक्रिय होने के बजाय संज्ञानात्मक रूप से सक्रिय होना चाहिए। एंडरसन, रेडर और साइमन (2018), गैगने (2016), किर्नर, स्वेल्डर और क्लर्क (2006) का तर्क है कि सक्रिय शिक्षण सिद्धांत का समर्थन करने के लिए पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है और उनके अनुसार जो छात्र सामग्री के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हैं, उनके होने की संभावना अधिक है। ब्लूनर (2011) के तर्क के अनुसार सूचनाओं को वापस बुलाना।

• छात्र सक्रिय रूप से कैसे शामिल हो सकते हैं?

पहला सिद्धांत है कि एक इंजीनियरिंग कक्षा में एक अंग्रेजी भाषा के शिक्षक को प्राथमिकता पर अभ्यास करने की आवश्यकता होती है, वह है विशिष्ट उद्देश्य के लिए अंग्रेजी पढ़ाना। इंजीनियरिंग के छात्रों की योग्यता अनिवार्य रूप से तकनीकी है और उनकी मानसिकता उनके सामने आने वाली हर घटना की सटीकता और प्रासंगिकता की तलाश करती है। उस मामले में यदि शिक्षक कुछ ऐसा करता है जिसका वे आकलन करते हैं कि उनके लिए कोई कम या कम उपयोग नहीं है, तो वे स्पष्ट रूप से रुचि नहीं लेते हैं। जैसे ही शिक्षक किसी इंजीनियरिंग कक्षा में किसी कार्य या अभ्यास का परिचय देता है, छात्र उसका मूल्यांकन करना शुरू कर देते हैं। शिक्षक की क्षमता व्यायाम बनाने या कार्यों को इस तरह से करने में निहित है कि छात्र उस पर सहज प्रतिक्रिया दें। यह देखा गया है कि छात्रों की सक्रिय भागीदारी तभी सुनिश्चित की जा सकती है जब शिक्षक कक्षा में उत्प्रेरक की सक्रिय भूमिका निभा रहा हो (माज़िलु, 2004) यानी शिक्षक को न केवल कक्षा में बल्कि छात्रों को सक्रिय बनाने के लिए सक्रिय होना चाहिए। कक्षा के बाहर भी भाषा सीखना कक्षा की सीमाओं के बाहर भी जारी है।

उदाहरण - गतिविधि लक्षित शिक्षार्थी: बी.टेक प्रथम वर्ष के छात्र (सूचना प्रौद्योगिकी शाखा)कार्य: किसी ऐसे व्यक्ति का साक्षात्कार करें जिसके पास समान योग्यता (बी.टेक सूचना प्रौद्योगिकी) है, व्यक्तिगत रूप से, टेलीफोन पर, या ई-मेल के माध्यम से।

उद्देश्य

1. माध्यमिक या उच्च माध्यमिक के कक्षाओं में छात्र अध्यापक / छात्र अध्यापिकाओं के द्वारा सक्रिय अधिगम विधियों को प्रयोग करके कक्षा – कक्ष को रोचक बनाना।
2. सक्रिय अधिगम विधि को पाठ योजना में शामिल करना एवं परम्परागत शिक्षण विधि को नई तकनीकी विधि में परिवर्तन करके अध्यापन में सक्रियता लाना।

सक्रिय अधिगम प्रविधि की आवश्यकता :-

यह देखा गया कि अभी तक शिक्षक या छात्र अध्यापक / अध्यापिकाओं में अध्यापन अभ्यास के दौरान माध्यमिक या उच्च माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत शिक्षक या प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक परंपरागत विधि या प्रविधि से पाठ योजनाओं को बनाकर शिक्षण कार्य या अध्यापन अभ्यास कार्य को सम्पन्न कराते हैं जिसके मूल्यांकन में यह पाया जाता है कि परम्परागत विधि से सम्पन्न कराया गया शिक्षण अध्यापन अभ्यास निष्क्रिय या नीरस और उबाऊ होता है। जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षण का लक्ष्य व्यर्थ हो जाता है। इसलिये एक शिक्षक या अध्ययनरत शिक्षक (छात्र अध्यापक / अध्यापिका) द्वारा अध्यापन अभ्यास के दौरान सक्रिय अधिगम प्रविधि का प्रयोग किया जाना चाहिए , ताकि अध्यापन अभ्यास रोचक , रुचिकर एवं आनंददायी हो सके और बच्चों की सहभागिता मौजूद हो सके। कक्षा – कक्ष सक्रिय बना रहे इसलिये . के प्रशिक्षकों के लिए अध्यापन अभ्यास के दौरान सक्रिय विधि की आवश्यकता है ताकि अध्यापन अभ्यास रुचिकर , आनंददायी व गतिविधि केन्द्रित होकर छात्र को कक्षा में रखा जा सके। इसलिये . के छात्र अध्यापक / अध्यापिकाओं को सक्रिय अधिगम प्रविधि पर आधारित पाठ योजना का निर्माण करने अध्यापन अभ्यास करवा कर कक्षा के छात्रों के व्यवहार में आए परिवर्तनों को देखा जा सकता है। माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षाओं में सक्रिय अधिगम प्रविधि (एक्टिवलर्निंग मैथड) पर आधारित पाठ योजना आवश्यक है

1. माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा में छात्र अध्यापक / छात्र अध्यापिकाओं के द्वारा किया गया अध्यापन अभ्यास से कक्षा को सक्रिय बनाने हेतु।
2. कक्षा में अध्ययनरत छात्र अध्यापक / अध्यापिका अध्यापन अभ्यास के दौरान कक्षा में अधिगम प्रविधियों को प्रयोग करने में दक्ष हो सके।
3. माध्यमिक या उच्च माध्यमिक कक्षा में छात्र – शिक्षक के बीच सक्रियता बनाने हेतु जिसके माध्यम से कक्षा – कक्ष अन्तः क्रिया सूचारु रूप से चलाने हेतु।
4. कक्षा में छात्र अध्यापकों / अध्यापिकाओं की अध्ययन अभ्यास प्रक्रिया में उचित सूधार हेतु।
5. कक्षा में अध्ययनरत छात्र अध्यापक / अध्यापिकाओं को अध्यापन अभ्यास में सक्रिय प्रविधि का प्रयोग करने हेतु विभिन्न विशिष्ट शिक्षण विधि एवं आधुनिक शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग करने हेतु।

6. परम्परा से चले आ रहे शिक्षण विधियों को हटाकर नये शिक्षण प्रविधियों को अध्यापन अभ्यास में प्रयोग लाने हेतु।

वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता

एक्टिव लर्निंग मेटडोलॉजी भारत में राज्य शिक्षा केंद्र जबलपुर जिले , (मध्यप्रदेश) द्वारा शुरू की गई स्कूली शिक्षा में एक नई अवधारणा है। एएलएम अन्य पारंपरिक तरीकों से अलग है। यह एक बहुत ही मिलनसार और आनंदमयी पद्धति है। जबकि पारंपरिक पद्धतियां शिक्षक-केंद्रित हैं, एएलएम छात्र-केंद्रित है, जिसमें शिक्षक बेहतर सीखने के लिए छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए सुविधा प्रदान करते हैं। चूंकि यह पद्धति शिक्षकों और छात्रों के लिए बहुत ही नवीन और उपयोगी है, इसलिए उच्च प्राथमिक स्तर पर विशेष रूप से धर्मपुरी जिले जैसे अर्ध-ग्रामीण क्षेत्र में एएलएम के कार्यान्वयन में शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण और समस्याओं की जांच करने की आवश्यकता महसूस की जाती है, जहां शहरी क्षेत्रों के स्कूलों की तुलना में ढांचागत और निर्देशात्मक दोनों सुविधाएं कम हैं।

न्यादर्श :-

इस क्रियात्मक अनुसंधान के लिये मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले के माधव महाविद्यालय के एजुकेशन 25 छात्राध्यापकों को यादृच्छिक विधि से चयन कर सम्मिलित किया गया है।

उपकरण :-

इस अनुसंधान के लिये सक्रिय अधिगम विधि एवं परम्परागत प्रविधि पर आधारित अध्यापन – अभ्यास अवलोकन प्रपत्र को उपकरण के रूप में सम्मिलित किया गया है।

कार्य प्रणाली :-

छात्राध्यापकों का सक्रिय अधिगम प्रविधि पर आधारित अध्यापन – अभ्यास पाठ योजनाएं बनाने और उसके प्रस्तुतीकरण के संबंध में कालखंडों में बारी – बारी से सक्रिय अधिगम प्रविधि प्रभारी तथा अनुसंधानकर्ता के सम्मुख प्रस्तुत करवाया गया तथा छात्राध्यापकों को परम्परागत विधि पर आधारित पाठ योजना को बनाने एवं उसके प्रस्तुतीकरण के संबंध में कालखण्डों में बारी – बारी से प्रभारी तथा अनुसंधानकर्ता के सम्मुख प्रस्तुत करवाया गया। अनुसंधानकर्ता अध्यापन – अभ्यास अवलोकन के लिये 15 बिन्दुओं पर आधारित एक अवलोकन प्रपत्र का निर्माण किया।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि इस अनुसंधान के विश्लेषण एवं अवलोकन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कक्षा कक्ष को सक्रिय बनाने के लिये एक्टिव लर्निंग मैथड का प्रयोग किया जाए तो कक्षा में अध्यापन क्रिया सफल होगी। परम्परागत विधि की अपेक्षा शिक्षण अधिगम में यदि एक्टिव लर्निंग मैथड का प्रयोग किया जाय तो छात्रों में अध्यापन अभ्यास में रोचकता उत्पन्न होगी।

सक्रिय अधिगम प्रविधि (एक्टिव लर्निंग मैथड) छात्र अध्यापक / अध्यापिका द्वारा अध्यापन अभ्यास में प्रयोग किये जाने पर सम्पूर्ण अधिगम के समय छात्र एवं शिक्षक को सक्रिय बनाये रखने के लिये नजर आती है। एक्टिव लर्निंग मैथड अध्यापन अभ्यास को परम्परागत विधि से घटाकर नवीनतम शिक्षण गये पाठ को बच्चों को समझ में आता है और छात्र आनंदित होने के साथ छात्र केन्द्रिय कक्षा होती है जिसके परिणाम स्वरूप कक्षा का वातावरण संतुष्टिपरक बन जाता है सक्रिय अधिगम प्रविधि के अंतर्गत छात्र में समुख मॉडल , चार्ट , माइन्ड मैप , वेब थीम , अभिनय , श्लोक सूत्र , किम , क्रोनोलॉग , वाय टेम्पलेट एवं क्लोज टेस्ट इत्यादि प्रविधि का प्रयोग किया जाता है तो कक्षा कक्ष में विद्यार्थियों के चेहरे पर चमक , उल्लास और रुचि दिखाई देती है। यदि प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा शिक्षण अभ्यास पाठ योजना में एक्टिव लर्निंग मैथड का प्रयोग करते हैं तो उनकी कक्षा में उपस्थित छात्र भी सक्रिय रहते है।

इस विधि का प्रयोग करने से छात्रों में पढ़ाई करने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है। परम्परागत प्रविधियों से पढ़ाये गये पाठ में छात्र सहभागिता नहीं होती है लेकिन एक्टिव लर्निंग मैथड में छात्र सहभागिता मौजूद होती है। प्रायः देखने में यह आता है कि शिक्षक , विद्यार्थियों से वही प्रश्न पुछते हैं , जो उनकी पाठ्य पुस्तक में दिये गये रहते है और विद्यार्थी भी रट कर इन प्रश्नों का उत्तर देते है। इस तरह के अध्ययन में मूल चरित्र , विशय पर समझ कहीं पीछे छूट जाता है और विद्यार्थी रटने की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होने लगता है।

सुझाव :

1. शिक्षण अभ्यास प्रक्रियाओं को प्रभावशाली बनाने के लिये प्रशिक्षणार्थियों को सक्रिय अधिगम प्रविधि (एक्टिव लर्निंग मैथड) का प्रयोग करना चाहिए।
2. छात्र कक्षा कक्ष में बैठे – बैठे ऊब हो जाते है , क्योंकि शिक्षक द्वारा पढ़ाये गये पाठ को नहीं समझ पाते है यदि शिक्षक या प्रशिक्षणार्थी उस पाठ को रोचक बनाते है तो छात्र कक्षा में मन लगाकर उपस्थित होते है। इसलिए एक्टिव लर्निंग मैथड का प्रयोग करना चाहिए।
3. पाठ्यक्रम में अध्यापन अभ्यास के दौरान जो पाठ योजना बनाई जाती है वह परम्परागत प्रविधियों एवं विधियों से बनाया जाता है , यदि इस अध्यापन के दौरान पाठ योजना में एक्टिव लर्निंग मैथड का प्रयोग किया जाए जो कक्षा कक्ष में ऊबाउपन उत्पन्न नहीं होगी।
4. सीखना तभी संभव है जब सिखने और सिखाने वाले दोनों सक्रिय हो, कक्षाओं में सीखने – सिखाने की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावशाली बनाने हेतु सक्रिय अधिगम प्रविधि का प्रयोग करना चाहिए।
5. सक्रिय अधिगम प्रविधि (एक्टिव लर्निंग मैथड) के अंतर्गत बहुत सारे प्रविधियां मौजूद है जैसे – माइन्ड मैप , वेब थीम , अनिनय , क्लोज टेस्ट , प्लोक सूत्र , एवं अन्य ये सभी प्रविधियों का प्रयोग शिक्षक को करना चाहिए ताकि कक्षा में छात्र ध्यान दे एवं अधिगम की प्रक्रिया आनंदित हो।
6. कक्षा में शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिये उचित शिक्षण विधि का प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक है। परम्परागत शिक्षण विधि में व्याख्यान तथा ब्लैक बोर्ड विधि का प्रयोग किया जाता है। इस शिक्षण विधि में व्याख्यान तथा ब्लैक बोर्ड विधि का प्रयोग किया जाता है। इस शिक्षण

विधि में शिक्षक व्याख्यान देता है और छात्र होकर सुनते हैं। इसलिए शिक्षक को अधिगम प्रक्रिया के दौरान सक्रिय अधिगम प्रविधि (एक्टिव लर्निंग मेथड) का प्रयोग करना चाहिए।

उपसंहार

अतः हम कह सकते हैं कि कक्षा में शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिये उचित शिक्षण विधि का प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक है। इस शिक्षण विधि में शिक्षक व्याख्यान देता है और छात्र होकर सुनते हैं। इसलिए शिक्षक को अधिगम प्रक्रिया के दौरान सक्रिय अधिगम प्रविधि (एक्टिव लर्निंग मेथड) का प्रयोग करना चाहिए। कक्षा में शिक्षण तकनीकों का उपयोग करके सीखने की अवस्थाओं में सुधार किया जा सकता है। इससे शिक्षण एवं प्रशिक्षण को प्रभावशील बनाया जा सकता है। विद्यार्थी अपने स्वयं के पूर्व ज्ञान का उपयोग करके भी नवीन ज्ञान के विकास का प्रयास करता है।

संदर्भ:

- [1] शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान – प्रो . के . पी . पाण्डेय एवं डॉ . अमिता शर्मा।
- [2] सक्रिय अधिगम प्रविधि (ए . एल . एम) शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका – मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल।
- [3] एंडरसन, जे.आर., रेडर, एस., लिन, एम., हर्बर्ट, ए.के., एरिक्सन, ए. और ग्लेसर, आर. (2018)। कट्टरपंथी रचनावाद और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान। डी. रैविच में। शिक्षा नीति पर ब्रकिंग्स पेपर्स (पीपी। 27 28)।
- [4] वाशिंगटन, डी.सी.: ब्रकिंग्स इंस्टीट्यूट प्रेस। बोनवेल, सी।, ईसन, जे। (2019)। सक्रिय शिक्षणरू कक्षा में उत्साह पैदा करना। म्म-म्ह उच्च शिक्षा रिपोर्ट नंबर 1। वाशिंगटन, डी.सी.: जोसी-बास। आईएसबीएन 1-87838-00-87.
- [5] ब्रूनर, जे.एस. (2011)। खोज का कार्य। हार्वर्ड एजुकेशनल रिव्यू 31 (1): 21 32.
- [6] चौधरी, शीरेश. (2012)। भारत में अंग्रेजी भाषा शिक्षण का समाजशास्त्रीय संदर्भ। एस कुडचेडकर (एड।) में। भारत में अंग्रेजी भाषा शिक्षण। ओरिएंट लॉन्गमैन, चेन्नई।
- [7] चिकरिंग, आर्थर डब्ल्यू., और गैमसन, ज़ेल्डा एफ. (2017) ,अच्छे अभ्यास के लिए सात सिद्धांत। आर्हे बुलेटिन 39: 3-7। ईडी 282 491. 6 पीपी. एमएफ-01; पीसी-01.
- [8] गगने, आर (2016) सीखने की विविधता और खोज की अवधारणारू एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। शुलमैन में, एल.एस. और कीस्लर, ई.आर. (एड्स) डिस्कवरी द्वारा सीखनारू एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। शिकागो: रैंड मैकनेली एंड कंपनी गार्डनर, आर.सी., और लैम्बर्ट, डब्ल्यू.ई. (2012)।

- [9] एटिट्यूड एंड मोटिवेशन: सेकेंड लैंग्वेज लर्निंग न्यूबरी हाउस। Kirschner, P- A-, Sweller, J-, & Clark, R- E- (2006)। निर्देश के दौरान न्यूनतम मार्गदर्शन काम क्यों नहीं करतारू रचनावादी, खोज, समस्या-आधारित, अनुभवात्मक और पूछताछ-आधारित शिक्षण की विफलता का विश्लेषण। शैक्षिक मनोवैज्ञानिक <http://www-cogtech-usc-rschner&Sweller&Clark-pdfA>
- [10] स्पिट्जबर्ग, ब्रायन एच। कपैच, विलियम आर। (2014)। पारस्परिक संचार क्षमता।सेज पब्लिकेशंस इंक। स्वेलर, जे। (2018)। समस्या समाधान के दौरान संज्ञानात्मक भार: सीखने पर प्रभाव। संज्ञानात्मक विज्ञान 12 (1): 257 285. कवपरू10.1016 / 0364-0213(88)90023-7.